श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ५

ऑक्टोबर - /2022

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. महाज्ञानी के चरणों में जीवन समर्पित कर सच्चे अणगार बन कर ..... का सिद्धान्त समझे ।
२. परमात्म पूजा में सावधानी न रखने पर यह जीव संसार में बहुत समय तक ..... करता रहता है ।
३. अल्प समझाने पर अपनी अक्कडता त्याग कर ..... वाला व्यक्ति नम जाता है ।
४. गंधापाती नामक वृत-वैताढय..... के मध्य में रहा हुआ है ।
५. धर्म के लिये अनुकूल देश एवं उत्तम..... मनुष्यों का सहवास अपेक्षित होता है ।
६. पर्वतो का पति मेरु पर्वत भी ..... के गुणों से उन्हें पा सकता नहीं ।
७. नपुंसक वेद को ..... के तुल्य जानना चाहिये ।
८. एक चांडाल के यहां पुत्र जन्म होते ही पूर्वभव के वैरी ..... देवता ने हरण करके उसे वन में रख दिया ।
९. नीलवंत पर्वत ..... हरे वर्ण का है ।
१०. सर्व लोक को ..... किये प्रभाव से जानने योग्य ऐसे शांतिजिन ! आप मुझे समाधी दो ।
११. दिशाव्रत का प्रमाण कर फिर विस्मृत करदे कि अमुक दिशा में कितने मील जाना है ? वह ..... नामक अतिचार है ।
१२. धूप के जैसी आत्मा की ..... देवाधिदेव की धूप पूजा करने से होती है ।
१३. जिसके उदय से ..... उदय में न आवे वह प्रत्याख्यानी चार कषाय है ।
१४. द्रव्यार्थी कोई दो पुरुष देशान्तर जाकर किसी..... की सेवा कर रहे थे ।
१५. माल्यवंत और ..... ये दो पर्वत उत्तरकुरु को घेरकर रहे हुए हैं ।
१६. दिक्परिमाण व्रत में ..... से जो अतिचार दोष लगते है वो पाँच प्रकार के हैं ।
१७. जीव ..... चार गति में उत्पन्न होता है ।
१८. आत्मा को रंजित करने वाला..... लोभ है ।
१९. इस अवसर पर पुण्यसार को जन्म देनेवाली ..... भी आई थी ।
२०. विद्धद्शिरोमणी सुधर्म पंडित का पूरा नाम श्री सुधर्म धम्मिल ..... था ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. दुनिया में सबसे गहरा और चौडाई वाला समुद्र कौन सा है ?
२. पुण्यानुबंधी पुण्य का अद्भूत साधन क्या है ?
३. नये कर्म बंधवाकर संसार बढाने वाला कौन है ?
४. सोमिल ब्राह्मण के आमंत्रण पर व्यक्त ब्राह्मण यज्ञ के लिये कहाँ पधारे थे ?
५. नवीन शरद ऋतु का चंद्र भी किन गुणों से प्रभु को पा सकता नहीं ?
६. पांडुक वन में चार महाशीलाएं किसकी बनी हुई हैं ?
७. मूलनायक की प्रतिमा विशेषतः कैसी मुद्रावाली होती है ?
८. अस्थि के जैसा क्या है ?
९. आज जिन शासन के साधु-साध्वी किनकी शिष्य परंपरा है ?
१०. मायावी संसार में पंचभूत जैसा कुछ है ही नहीं ऐसी शंका किसे थी ?
११. विजयों की मर्यादा की रक्षा करने वाले पर्वत क्या कहलाते हैं ?
१२. अजितनाथ भगवान किस अंधकार से रहित है ?
१३. पृथ्वी में पडी दरार की उपमा किसे दी गई है ?
१४. गजदंतगिरी पर्वत कैसे दिखाई देते है ?
१५. किस विधि से की गई पूजा महान लाभकारी होती है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. विहिजोगो २) सत्ते ३) अहिलासो ४) दीट्ठी ५) पवर ६) रुवगुणेहिं ७) श्रृगालो ८) सुसवाओ ९) कुच्छ १०) सारय ११) अइरेअ
१२. उचिठ्ठं १३) निरय १४) क्कमण १५) मिंढ १६) पायन्न १७) जुत्ति १८) निद्ध १९) माणो २०) पइस

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) जुगुप्सा	१) सेतुबंध	६) सिद्धभस्म	६) पुण्यसार
२) अवज्ञा	२) महाविदेह	७) बिच्छु	७) स्निग्ध
३) मायावी	३) रजतमय	८) मंदर मेरु	८) शोक
४) दंतपंक्ति	४) इन्द्रजाल	९) रुक्मि	९) सुवर्ण
५) दिशा का परिमाण	५) कर्दुम	१०) अंजन	१०) गोबर

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. महाविदेह क्षेत्र के बीच कितने दीर्घ वैताढय पर्वत हैं ?
२. अप्रत्याख्यानी कषाय का काल कितने दिन का है ?
३. गुप्ति कितने प्रकार की है ?
४. परमात्मा की पूजा करते कितने पटल मुखकोष का उपयोग करना चाहिये ?
५. श्री व्यक्त स्वामी चारित्र लेने के बाद कितनावे वर्ष में केवलज्ञानी बने ?
६. चारित्र मोहनीय कर्म के भेद कितने हैं ?
७. रुक्मि पर्वत कितने योजन चौडा है ?
८. इन्द्र महाराजा ने कितनी जाति के कलशो से प्रभुजी का जन्माभिषेक किया ?
९. सुधर्मा पंडित ने अपने कितने शिष्य परिवार के साथ प्रभु के पास दीक्षा ली ?
१०. जंबुद्वीप में कुल कितने पर्वत हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. मिश्र मोहनीय का काल अन्तर्मुहुर्त का होता है ।
२. माल्यवंत और गंधमादन ये दो पर्वत श्वेत और लाल वर्ण के हैं ।
३. कुविकल्प करके बाजु की दिशा की भूमि के मील कम करके दूसरी दिशा के मील बढाये तो व्रत का भंग होता है ।
४. देवाधिदेव की पूजा अविधि से करने से पूजा का महान लाभ साधक गँवाता है ।
५. मृत्यु के बाद जन्म भले ही बदलता हो परंतु गति नहीं बदलती ऐसा सुधर्म पंडित का मानना था ।
६. प्रत्यांख्यानी मान बेंत जैसा है ।
७. यमक समक पर्वत का आकार उर्ध्वगोपुच्छ जैसा है ।
८. तप और संयम में भी न जीते गये ऐसे अजितनाथ भगवान हैं ।
९. व्यक्त स्वामी ने ३० वर्ष गृहस्थाश्रम में बीताने के बाद ५० वर्ष तक चारित्र पर्याय का पालन किया ।
१०. श्रावक का प्रथम गुणव्रत दिक्परिमाण व्रत है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. प्रायः पराये अन्यो के वस्त्र पूजा के लिये नहीं वापरना ।
२. चार शिलाओं पर छः सिंहासन होते हैं ।
३. असंतोष मानव को अनेक दिशाओं में द्रव्य संचय करने के निमित्त से अनियमित रुप से परिभ्रमण कराता है ।
४. ये वेदपद भूतो के अभाव को सूचित नहीं करते ।
५. अज्ञान से हुई जिनराज की आशातना भी जीव को दुखदायी है ।
६. कषाय तो नहीं पर कषाय के सहचर जो कषाय करने में प्रेरित करते हैं ।
७. वक्ष याने छाती महाविदेह की विजय आमने सामने है वैसे ही ये पर्वत आमने सामने है ।
८. तपाई गई चांदी के पाटे जैसी श्रेष्ठ, निर्मल, स्निग्ध और धवल दांत की पंक्ति है ।
९. जीव अध्यवसायो की शुद्धि-अशुद्धि के कारण सम्यक्त्व अथवा मिथ्यात्व पाते है ।
१०. जिसका घर कभी भी बदल जाता है, उसका पता लेने से क्या फायदा ?

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. क्षेत्रवृद्धि तथा स्मृतिअंतर्धान अतिचार २) वक्षस्कार पर्वत ३) मूलनायक की प्रथम पूजा किसलिये
४. चार प्रकार की माया समझाईये ५) श्री व्यक्त स्वामी की शंका और प्रभु का समाधान